भक्तिकाल

भक्तिकाल को दो भागों में बाँटा गया है

निर्गुण भक्ति धारा

सगुण भक्ति धारा

इन दो भागों को पुनः दो उप भागों में बाँटा गया

ज्ञानाश्रयी

प्रेमाश्रयी

रामाश्रयी

कृष्णाश्रयी

निर्गुण भक्तिधारा

रामचन्द्र शुक्ल इसे ज्ञानाश्रयी शाखा नाम देते हैं।

डॉ० रामकुमार वर्मा इसे संतकाव्य की संज्ञा से अभिहित करते हैं।

हजारी प्रसाद द्विवेदी इसे निर्गुण भक्ति साहित्य कहते हैं।

निर्गुण भक्तिधारा

दार्शनिक दृष्टि से अद्वैतवाद (कबीर, दादू, मलूकदास) और भेदाभेदवाद (नानक)। भेदाभेदवाद में जीव तथा ब्रह्म में छोटे-बड़े का अंतर

कबीर से पूर्व के कवि- चक्रधर, ज्ञानेश्वर, मुक्ताबाई

ये सभी कवि निम्न वर्ग के थे। आज इनके नाम पर अलग-अलग पंथ और सम्प्रदाय स्थापित हो गये हैं।

कबीर- कबीर पंथ, रैदास- रैदासी सम्प्रदाय, नानक- सिख पंथ, लालदास- लाल पंथ, दादू दयाल- दादू पंथ, हरिदास- निरंजनी सम्प्रदाय, मलूकदास- मलूक पंथ

निर्गुण भक्तिधारा

प्रमुख उद्देश्य	उत्पीड़ित मानव को ज्ञान तथा मानव हित
साधना प्रणाली	योग साधना- कुण्डलिनी जागरण को महत्त्व- कबीर, सुन्दरदास, हरिदास
साधना प्रणाली	सहज साधना- योग का अभाव- नानक, रैदास दादू, रज्जब

निर्गुण भक्तिधारा की विशेषताएँ

१. मूर्ति पूजा तथा अवतारवाद का विरोध (इस्लाम के एकेश्वरवाद के कारण, किन्तु गणपति चन्द्र गुप्तगुप्त का मानना है कि शंकर के अद्वैत के कारण)

२. वर्णाश्रम, जातिवाद का विरोध (खण्डन-मण्डन को महत्त्व)

३. सद्गुरू की उपासना ब्रह्म के रूप में

४. शास्त्रीय ज्ञान की अनिवार्यता निषेध

५. शास्त्रीय ज्ञान की अनिवार्यता निषेध

६. नाम स्मरण को महत्त्व

७. दोहा और पद शैली में रचनाएँ

८. ब्रज-अवधी मिश्रित सधुक्कड़ी भाषा

प्राणनाथ, सहजोबाई, जगजीवन दास

निर्गुण भक्तिकाव्य पर प्रभाव

१. सन्तों के चिन्तन, जीवन दर्शन और काव्यधारा पर उपनिषदों का व्यापक प्रभाव है। उपनिषदों में प्रतिपादित ब्रह्म, जीव, जगत और माया सम्बन्धी विचारधारा के साथ ही ब्रह्म के स्वरूप वर्णन से सम्बद्ध उपमानों और अप्रस्तुत योजनाओं को उसी रूप में ग्रहण किया

२. संत काव्यधारा शंकर के अद्वैत दर्शन से प्रभावित है। सन्तों की विवर्त भावना, प्रतिविम्ब भावना, प्रणय भावना, साधना पक्ष और भक्ति पद्धति आचार्य शंकर से प्रभावित है। जीव को विशुद्ध ब्रह्म तत्त्व एवं जगत को माया मानने का दर्शन संत और शंकर दोनों में मिलता है। संत परम्परा में आत्मा की अखण्डता, एकरसता, अद्वैतरूपता, एवं अकथनीयता का प्रतिपादन शंकर के अनुरूप है।

निर्गुण भक्तिकाव्य पर प्रभाव

३. संत साधना में प्राप्त योग-प्रक्रिया नाथपंथी साधना पद्धति से प्रभावित है। सिद्धों की उलटवासियाँ एवं संध्या भाषा का प्रभाव देखा जा सकता है।

४. संत काव्यधारा पर तंत्र साधना का भी प्रभाव रहा है। कबीर भले ही 'तंत्र न जानू मंत्र न जानू, जानू सुन्दर काया' कर अवहेलना करते हैं किन्तु उनके अनन्तर मलूक पंथ और निरंजनी सम्प्रदाय में यह प्रभाव देखा जा सकता है।

५. इस्लाम से प्रभावित होने के कारण यह एकेश्वरवाद का प्रतिपादन तथा मूर्तिपूजा एवं अवतारवाद का विरोध करते हैं।

निर्गुण भक्तिकाव्य पर प्रभाव

६. संत काव्य में प्राप्त दाम्पत्य प्रतीकों की उपलब्धि पर सूफी दर्शन का प्रभाव परिलक्षित होता है। सूफियों द्वारा धार्मिक कटुता को समाप्त करके जो प्रेम, सहिष्णुता, औदार्य एवं मधुरता का प्रसार किया गया वह संत कवियों के सहयोग से ही संभव हुआ।

७. संत कवियों ने वैदिक संहिता, वैदिक परम्पराओं और वाह्याचारों का जो विरोध किया वह बौद्ध धर्म की अनुकृति है।

शेषराव सुभाष माने

- **हिन्दी विभाग**

बलीराम पाटील महा. **किनवट**